

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

०७/१०/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा सतगुरु जी को नमस्ते। परमात्मा सतगुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप अवस्था में स्थित हो जाएं... सभी देखें अपनी मूलस्वरूप अवस्था, अपना मूलस्वरूप... सभी अनुभव करें अपने मूलस्वरूप को... देखिए, आप आत्मा से लाइट निकल रही है... सभी अपने उस लाइट की अवस्था में स्थित हो जाएं... सभी अपनी लाइट की स्पष्टता से देखें...

इस समय परमात्मा से खास मूलस्वरूप अवस्था में आने के लिए, अपनी लाइट में स्थित होने के लिए स्पेशल ताकत मिलती है। इसलिए इस समय में वाणी के दरमियान जितना हो सके, सभी आत्माएं अपनी लाइट की अवस्था में बैठें। आपको आपकी लाइट की अवस्था अति सहज रूप से दिखेगी, क्योंकि परमात्मा की खास ताकत इस समय, इस अवस्था में बैठने के लिए मिलती है। कोई भी इसे, इस ताकत को अनुभव कर सकते हैं। इसलिए वाणी से पहले जो मूलस्वरूप स्थिति में, लाइट की अवस्था में बैठने के लिए सभी आत्माओं को कहा जाता है, उस समय सभी आत्माएं अलर्ट रहना, उस समय को नहीं गवाना। क्योंकि उस समय में जो आप आपके मूलस्वरूप अवस्था में बैठने का प्रयास करेंगे, वह अवस्था लंबा समय तक सहज रूप से चलती रहेगी, अनकॉन्ससियसली।

इसलिए सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप को अभी १० सेकंड के लिए स्पष्टता से देखें... देखिए, आपका लाइट का स्वरूप...

जितना-जितना आप आपके लाइट के अवस्था में उतरते जाओगे, उतना-उतना आपका हर कर्म सहज अवस्था में होता जाएगा। जितनी-जितनी आप आपके लाइट के अवस्था की प्रैक्टिस करेंगे, कर्मों में रहकर आपको आपका स्थूल शरीर भी सूक्ष्म महसूस होता जाएगा — जैसे कि आप कोई एंजेलिक बॉडी

में हो, इतना आपको आपका स्थूल शरीर हल्का महसूस होगा, क्योंकि आप लाइट की अवस्था में आ गए।

जितना-जितना लाइट की अवस्था में आ गए, उतना-उतना स्थूल बातें, स्थूल चीजें, उनका असर आप पर नहीं होगा। जितना-जितना आप लाइट में स्थित रहोगे, उतना-उतना आप बाहरी सभी मटेरियल दुनिया की हर एक वस्तु, हर एक पदार्थ, हर एक स्थान, सभी से उनका प्रभाव आपके ऊपर से हटता जाएगा। आप कभी भी इनके प्रभाव में नहीं आ पाओगे, अगर आप आपके लाइट के अवस्था में स्थित रहेंगे।

किसी ने कुछ कहा, किसी ने निंदा की, किसी ने स्तुति की, किसी ने कुछ बोला, मान-अपमान किया, पर आप अगर आपके लाइट के अवस्था में होंगे, तो इन सभी बातों का आप लाइट आत्मा पर प्रभाव नहीं आएगा। पर अगर आपकी लाइट ऑन नहीं होगी, तो किसी ने कुछ कहा आपके खिलाफ, किसी ने आपको गाली दी या बुरा-भला बोला, पर आप लाइट में ना होने के कारण आप मायावश, परवश हो गए और आपको बुरा लगेगा, आपको दुख की भासना आएगी, आप उदास हो जाएंगे, आप उस बात से, उस बोल से डिस्टर्ब हो जाएंगे, क्योंकि आपने आपके ऊपर वह बात को जोर-जबरदस्ती अपने ऊपर ले लिया। वह बात, वह बोल आपके लिए तो थे भी नहीं, क्योंकि आप जानते हो आप आत्मा अति सुंदर है, शुद्ध है। अगर आपसे कुछ विपरीत कर्म, बोल, व्यवहार घटित होते हैं, तो वो आपके मायावी संस्कार के कारण, मायावी अस्तित्व के कारण हो रहे हैं और आपको जो बुरा-भला बोला जा रहा है, वह भी आपके उस मायावी अस्तित्व को, उस मायावी संस्कार के लिए बोला जा रहा है। तो कोई भी बात आप आत्मा के लिए है ही नहीं। इसलिए जब आप आपकी लाइट में स्थित रहोगे, तब बाहरी रूप से कोई आपकी निंदा करे, ग्लानी करे, अवज्ञा करे, आप पर उसका असर नहीं आ सकता।

उस ही प्रकार से अगर किसी ने आपकी स्तुति की, महिमा की, पर आप आत्मा अगर लाइट में स्थित हो, तो आप आत्मा को यह संपूर्ण रूप से ज्ञात है कि जो भी अच्छा आपके द्वारा हो रहा है, वह करने

वाला परमात्मा है। मुझ आत्मा के अंदर जो गुण-शक्तियां भरी हैं, वह परमात्मा ने ही भरी हैं। मुझ आत्मा के अंदर जो दिव्य गुण भरे हैं, दिव्य संस्कार भरे हैं — जिसके कारण कोई आपकी महिमा या स्तुति कर रहा है — तो आप आत्मा को, यह सम्पूर्ण रूप से, अगर आप लाइट में स्थित होते हो, तो आपको यह सदैव स्मृति रहेगी कि यह दिव्य गुण, यह सतगुण मुझ आत्मा में भरने वाला एक परमात्मा ही है। इसलिए महिमा भी सिर्फ उस ही की होनी चाहिए, स्तुति भी सिर्फ एक परमात्मा की ही होनी चाहिए। पर यह कब होगा? जब आप आत्मा लाइट की अवस्था में स्थित होंगे तब।

निंदा, स्तुति, मान, अपमान — इन सब से परे आप आत्मा हो, आप वह लाइट हो। आप अति शुद्ध, अति तेजस्वी हो। इसलिए अगर आप किसी भी कारण से ऊपर-नीचे आपकी स्थिति को करते हो, तो आप समझ जाना आप लाइट की अवस्था में ना होने के कारण, आप आपके मायावी अस्तित्व के परवश हो गए हो। क्योंकि लाइट को कभी निंदा नहीं, ना ही कभी स्तुति पसंद है। लाइट सदैव लाइट ही है, वह सदैव शुद्ध ही है। लाइट को कभी हार या जीत — इससे वह कभी प्रभावित नहीं होती, वो सभी प्रभावों से परे है। पर यह सब रियलाइज कब होगा? जब आप आपके लाइट का अभ्यास करते जाओगे, आप आपके लाइट के स्थिति में आते जाओगे।

आप एक की लाइट ऑन होने से पूरे संसार में उसका प्रभाव आता जाएगा। आप एक की लाइट ऑन होने से आप तो निंदा, स्तुति, मान, अपमान से परे रहोगे ही, पर साथ ही साथ आपके संबंध-संपर्क में जितने भी अस्तित्व आएंगे या आते हैं, उनको भी यह रिलाइजेशन होता जाएगा कि निंदा, स्तुति, मान, अपमान यह सब लाइट के लिए नहीं है, क्योंकि आप आत्मा उस रिलाइजेशन में उतर गयी। जो-जो आप लाइट में स्थित रह के आप रियलाइज करते जाओगे, वो हर एक बात आपके संबंध-संपर्क में आने वाला हर एक अस्तित्व वह बात रियलाइज करता जाएगा। आप लाइट में स्थित रहोगे, आपने आपके अंदर का क्रोध को छोड़ दिया, आपके संबंध-संपर्क में जो भी आएंगे, वो भी उस विपरीत गुण को, क्रोध को छोड़ देंगे, क्योंकि आपने लाइट में आकर उसे रियलाइज करके मुक्त किया। इसीलिए कहावत है — “जैसा संग

होता है, वैसा रंग लगता है।” अगर आप लाइट के, अपने लाइट के संग में रहेंगे, अपने आप आपके सभी साथी-सहयोगी उसी ही लाइट के रंग में रंग जाएंगे, उनको अलग से बिठाने की जरूरत नहीं होगी। इसलिए हर किसी की लाइट में रहने की जिम्मेवारी है। और जितना-जितना आप लाइट में रहते जाओगे, आपको आपकी एक-एक बात रियलाइज होती जाएगी कि “यह गलत है, यह मुझे नहीं करना चाहिए।” वह बात आपसे तो छूट ही जाएगी, पर आपके संबंध-संपर्क वालों से भी अनकॉन्ससियसली छूटती जाएगी। जो-जो आप लाइट में रह के रियलाइज करोगे, वह हर एक बात वो सभी भी रियलाइज करते जाएंगे और यही है — स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन। आपको विश्व को परिवर्तन करने के लिए कहां बाहर जाने की जरूरत नहीं है, आपको सिर्फ आपके लाइट में स्थित होकर स्वयं के हर एक संस्कार का रियलाइज करना है। हर एक कर्म का, हर एक बोल का, हर एक भाव का, हर एक विचार का, हर एक संकल्प का, हर प्रकार की वृत्ति का आपको रियलाइज करना है, आपके अंदर वह परिवर्तन करना है, अपने आप आपसे छूटता जाएगा। क्योंकि आप लाइट में स्थित हो और आप हर एक बात को रियलाइज कर रहे हो, तो जैसे-जैसे आपसे वह छूटता जाएगा, आपके संबंध-संपर्क वाले सभी अस्तित्वों से वह छूटता जाएगा।

आपको किसी को बोल से सुधारने की या किसी को बोल से परिवर्तन करने की जरूरत नहीं होगी। क्योंकि एक होता है बोल से सामने वाले को सुधारना, पर अगर वह बात आप आत्मा के अंदर ही परिवर्तित नहीं हुई है, आप आत्मा से ही वह बात नहीं छूटी है, उस बात की ऊर्जा आप आत्मा से ही नहीं निकली है, तो आप सामने वाले को कितना भी समझाओ, उसके अंदर की वह बात निकालने के लिए, वह कभी भी नहीं निकल सकती। क्योंकि आप जो बात सामने वाले को बोल के द्वारा समझाने की कोशिश कर रहे हो, आप आत्मा स्वयं उसमें अटके हो — भल पूर्णता नहीं, पर अंशता ही सही। इसलिए आपके अंदर वह ऊर्जा अटकी होने के कारण, आप सामने वाले के अंदर से उस विपरीत बात की ऊर्जा को हटाने की चेष्टा कर रहे हो, जो कि नामुमकिन है। इसलिए कभी भी आप किसी को भी, कोई भी बात बोल

से समझाने की कोशिश करेंगे या प्रयास करेंगे, सबसे पहले चेक करना कि क्या वह बात आपके अंदर अभी भी है तो नहीं — भल उतनी रूप से नहीं जितनी सामने वाले के अंदर है, पर अंशता भी नहीं होनी चाहिए। आपकी समझाने की ऊर्जा व्यर्थ चली जाएगी, क्योंकि जिस बात से आप ही नहीं छूटे हो, वह ऊर्जा आपके अंदर ही पड़ी है और आप एक्सपेक्ट करते हो कि सामने वाला उससे छूट जाए — यह पॉसिबल नहीं है। इसलिए सबसे पहले स्व-परिवर्तन। आप कभी भी किसी को भी हर बात नहीं समझा सकते। जो बात आपके धारणा में आयी है, जो बात का आपके धारणा में संस्कार बना है, वही बात आप सामने वाले को सिखा सकते हैं और वही बात सामने वाला कर सकता है। क्योंकि आपके पास उस बात की, धारणा की, संस्कार की ऊर्जा पड़ी है और वही ऊर्जा आप सामने वाले को उस बात के लिए धारणा में लाने के लिए, समझानी के रूप में बातों के द्वारा आप करते हो। आप बात नहीं करते, आप आपकी ऊर्जा सामने वाले को ट्रांसफर करते हो। पर वही ऊर्जा ट्रांसफर होती है जो बात, जो गुण आपने आपके धारणा में लाया है। बाकी यहां-वहां से कितना भी ज्ञान सुनो और आप सामने वाले को समझाने की कोशिश करो, उसका कोई फायदा नहीं होगा — भल आप एक ही बात हजार बार भी किसी और को ना सुना दें। पर आपके अंदर ही वह नहीं है, तो कभी भी किसी के अंदर ०.१% भी नहीं उतर सकती, यह लॉ ही नहीं है। क्योंकि यह सब ऊर्जा का खेल है। आपके पास अगर शांति की ऊर्जा है, तो ही आप सामने वाले को कह सकते हो, आप सामने वाले को कहने के लिए पात्र हो कि “आप भी थोड़ा शांति में बैठा करो, आपको शांति मिलेगी।” इतनी सी बात सामने वाले को समझाने से पहले, आपके अंदर शांति का गुण धारण होना जरूरी है। इसलिए कभी-कभी कोई कहते हैं — “हम इनको इतना समझाते हैं, पर इनको समझ में ही नहीं आता।” कहां से समझ में आएगा, जबकि वह बात आपके अंदर ही नहीं है। भल आपने उस बात की समझ ली है, उस बात का ज्ञान उठाया है, पर आपने अब तक धारणा में नहीं लाई है। जितनी बात, जितना जो गुण आपके अंदर धारणा में होता है, उतना ही वह गुण, उतनी ही वह बात आप सामने वाले को ट्रांसफर कर सकते हैं, समझाने के तौर पर। इसलिए सामने वाले को, आपको लगता है कि वो सुधर

जाए, उससे पहले आपको आपके अंदर परिवर्तन करना होगा। जितना-जितना आप आपकी लाइट में रहते जाएंगे, उतना आपके अंदर परिवर्तन आता जाएगा और वही परिवर्तन की ऊर्जा सामने वाले को प्रभावित करेगी और वह भी अपना परिवर्तन करता जाएगा। यह अति सहज यात्रा है परिवर्तन की।

परिवर्तन के लिए कभी भी दूसरों को ब्लेम नहीं करना कि परिस्थिति के कारण या इनके-उनके कारण हमारी यह स्थिति ऐसी है। नहीं, जो भी है आपकी स्थिति, वह आपके भाग्य, आपके कर्मों अनुसार आपके पास है। पर अभी आपके हाथ में चॉइस है कि आपको क्या करना है — क्या आप चाहते हैं उस परिस्थिति से आप बाहर आ जाओ? अगर आप चाहते हो, तो आप परिस्थिति को कभी ब्लेम नहीं करोगे, ना ही कभी किसी व्यक्ति को ब्लेम करोगे, ना ही किसी अस्तित्व को ब्लेम करोगे। आपको अगर ब्लेम करना ही है, तो सिर्फ स्वयं को करो कि “अब तक आपको इस बात का रिलाइजेशन क्यों नहीं हुआ? क्यों हम इस प्रकार की स्थिति में हैं?” आप आपका रिलाइजेशन करते जाओ, आप अपने आप को परिवर्तित करते जाओ, अपने आप आपके परिस्थिति में भी परिवर्तन आता जाएगा। जो भी आपके साथ होता है, वह आप ही के कर्म, आप ही का भाग्य, आप ही के सारा पाप-पुण्य का खेल — उसी के कारण होता है, हर सेकंड, हर घड़ी। इसे सदा ध्यान रखना। इसलिए जो भी हो रहा है, उसे स्वीकार करना सच्ची दिल से और उस समय में — “अभी मुझे मेरे अंदर क्या परिवर्तन लाना है?” — उसका विचार करना।

जब आप हमेशा समाधान के स्वरूप में रहोगे कि “जो भी परिस्थिति आए, मुझे सिर्फ समाधान स्वरूप रहना है” — जब आप इस प्रकार से समाधान स्वरूप स्थिति में रहोगे, तो आपको परिस्थिति, परिस्थिति कभी भी नहीं लगेगी। और आपके सामने सारे रास्ते खुलते जाएंगे उस परिस्थिति को फेस करने के लिए और अपने स्थिति में रहकर उस परिस्थिति को पार करने के लिए। इसलिए जो भी आपके साथ हो रहा है, उसके लिए सबसे पहले परिस्थिति का दिल से शुक्रिया करना, क्योंकि एक और आपका कर्म-बंधन का हिसाब-किताब सामने आया चुत्कू होने के लिए और आपको आगे बढ़ाने के लिए।

जितना आप हर परिस्थिति में लाइट में रहोगे, लाइट के स्थिति में रहोगे, हर परिस्थिति ऐसे ही चुकू होती जाएगी। आपको पता भी नहीं चलेगा, परिस्थिति पार हो भी गयी। हर समस्या का समाधान एक ही है — अपनी लाइट की अवस्था में, लाइट की स्थिति में स्थित रहना।

आज का होमवर्क सभी के लिए इतना ही है कि हर कोई चेक करे — पूरे दिन भर में आपके सामने जो-जो परिस्थिति आती है, उन सभी परिस्थितियों में आप आपके लाइट के स्वरूप में, लाइट के फॉर्म में, आपके मूल अवस्था में स्थित रहते हो या परिस्थिति से घबराकर मायावश स्थिति में परवश होते हो। हर कोई अपने हर दिन का यह पोतामेल खुद से ही चेक करना — परिस्थिति आयी, क्या आप आपके लाइट के स्थिति में थे या नहीं थे? फिर आप ही को परिणाम सामने स्पष्ट रूप से दिखेगा।

सारा खेल आपकी लाइट के ऊपर ही है, सदैव। आपकी स्थिति, आपकी परिस्थिति आपकी लाइट के ऊपर ही निर्भर है। इसलिए सभी अपनी लाइट को सदा जागृत रखें, उसी से सारी प्राप्तियां हैं और उसी में कल्याण है आप आत्मा का।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः